http://samagamresearchjournal.com
PEER-REVIEWED (REFEREED) JOURNAL **ISSN 2231-0479**

समागम

अंतर्राष्ट्रीय मानक की शोध एवं संदर्भ की मासिक पत्रिका

वर्ष-23
अंक-06
विशेषांक-2023

विशेषांक संपादक : डॉ. पी. के. विजयलक्ष्मी

मनोज कुमार
सम्पादक

प्रो. (डॉ.) विशाला शर्मा
सहयोगी सम्पादक

विषय-विशेषज्ञ

प्रोफेसर के.जी. सुरेश
कुलपति, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल

गिरिजाशंकर
वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक, भोपाल

प्रो. (डॉ.) सुधीर गव्हाणे
पूर्व कुलपति, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय तथा एमजीएम विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र

जगदीश उपासने
अध्यक्ष, प्रसार भारती भर्ती बोर्ड, भारत सरकार

प्रो. (डॉ.) च्यांग चिंग खुई
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, बीजिंग विश्वविद्यालय, चीन

विवेक मणि त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर (भारत अध्ययन) क्वान्तोंग विदेशी भाषा विवि,चीन

डॉ. जयशंकर शुक्ल
विषय विशेषज्ञ, कोर एकेडमिक यूनिट, परीक्षा शाखा, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली

डॉ. सोनाली नरगुंदे
विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशालादेवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

डॉ. आरफा राजपूत
एसोसिएट प्रोफेसर, सिनेमा संकाय जी फिल्म स्कूल, नोएडा,यूपी

वृद्ध विमर्श/ 2

विशेषांक

वृद्ध विमर्श

The Venerable

सम्पर्क :

3,जूनियर एमआयजी, द्वितीय तल, अंकुर कॉलोनी,
शिवाजीनगर,भोपाल-(मप्र)462016
E-mail:samagam2016@gmail.com

आकल्पन : अपूर्वा

दत्ता कोल्हारे

सहयोगी समन्वयक (अवैतनिक)

सदस्यता

वार्षिक सदस्यता (व्यक्तिगत) : 6 सौ रुपये मात्र
वार्षिक सदस्यता (संस्थागत) : 1 हजार रुपये मात्र

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक कृति अग्रवाल द्वारा 3, जू. एमआईजी, द्वितीय तल, अंकुर कॉलोनी, शिवाजीनगर, भोपाल से प्रकाशित एवं तारा ऑफसेट प्रिंटर्स, शॉप नं.-4, जोन वन एमपी नगर भोपाल से मुद्रित. *सम्पादक- मनोज कुमार *अवैतनिक मानसेवी.

प्रकाशित सामग्री के लिए सहमति अनिवार्य नहीं. विषय विशेषज्ञ अवैतनिक एवं समस्त वैधानिक जवाबदेही से मुक्त. शोध आलेखों में व्यक्त विचार, तथ्य एवं आंकड़े के लिए शोधार्थी/शिक्षक लेखक स्वयं जिम्मेदार होंगे.

अनुक्रमणिका

1.	मानव जीवन की चरमावस्था के सुधार में हिन्दी कथा साहित्य का अवदान -डॉ. एस. कृष्ण बाबू	7-13
2.	आधुनिक हिन्दी साहित्य में वृद्ध-विमर्श -डॉ. पी.के. जयलक्ष्मी	14-18
3.	वृद्धावस्था एक विडंबना : 'काक स्पर्श' कहानी के संदर्भ में -डॉ. एस. दीप्ति	19-22
4.	चित्रा मुद्गल का उपन्यास गिलिगडु में चित्रित वृद्ध जीवन -डॉ. वै. वेंकट लक्ष्मी	23-27
5.	वृद्ध समस्याओं के केन्द्र में हिन्दी कहानी -डॉ. सीहेच.वी.महालक्ष्मी	28-34
6.	समकालीन हिन्दी कहानियों में वृद्ध विमर्श -डॉ. शेख बेनज़ीर	35-43
7.	रिटायरमेंट कहानी में चित्रित वृद्ध समस्या -डॉ. के. पद्मारानी	44-48
8.	वृद्धों की समस्यायें और समाधान -डॉ. गौस शेख	49-54
9.	वृद्धों की समस्याएं - एक विश्लेषण -डॉ. के.अनीता	55-58
10.	वानप्रस्थ -डॉ. टी. अरूणा कुमारी	59-64
11.	हिंदी कहानी और वृद्ध-विमर्श -डॉ. जे. के. एन.नाथन	65-75
12.	हिंदी कहानी साहित्य में वृद्धों की व्यथा - डॉ. वी. सरोजिनी	76-81
13.	धार्मिक मान्यताओं के बीच संघर्षरत जीवन- 'बूढ़ा ज्वालामुखी' कहानी के संदर्भ में -डॉ. बी. तिरूमला देवी	82-84
14.	बाप का बँटवारा - राजस्थानी कहानी	85-87

अनुक्रमणिका

के परिप्रेक्ष्य में वृद्ध विमर्श
–डॉ. के. श्याम सुन्दर

15. ''अपना रास्ता लो बाबा'' कहानी में ''बेचू बाबा'' के संदर्भ में एक साहित्यिक विमर्श 88–90
–डॉ. भाग्यवति

16. आधुनिक युग में वृद्धजनों की समस्यायें 91–93
–विनीता पोनाकला

17. हिन्दी कथा साहित्य में वृद्धों की समस्याएं 94–97
–ए. आदिलक्ष्मी

18. हिंदी साहित्य में वृद्ध विमर्श 98–103
–डॉ. हबीब शेख

19. यशपाल की कहानी 'समय' में वृद्ध विमर्श 104–107
–एन. इंदु वदना

20. हिंदी साहित्य में वृद्ध विमर्श 108–110
डॉ. बी. रवीन्द्र नायक

21. वर्तमान समय : साहित्य में बुजुर्गों की समस्याएं 111–117
–जी.गोवर्धन

22. समकालीन साहित्य में महिला वृद्धावस्था विमर्श 118–121
–बी.कमला/डॉ. अनुराधा पाकालपाटी

23. साहित्य मे वृद्ध विमर्श 122–127
–रंजना गुप्ता

24. वृद्धों की पारिवारिक समस्याएँ 128–132
कर्रा. पृथ्वी

25. हिंदी साहित्य में वृद्ध विमर्श 133–137
–लिंगम चिरंजीव राव

26. वृद्ध विमर्श और राष्ट्रीय वृद्धजन नीति 138–140
–रिया जैन

27. हिंदी कहानी : वृद्ध विमर्श 141–148
–डॉ. वी. मणि

समकालीन साहित्य में महिला वृद्धावस्था विमर्श

बी.कमला

पी.एच.डी शोधार्थी

वेल्स यूनिवर्सिटी पल्लावरम चेन्नई (VISTAS)

डॉ. अनुराधा पाकालपाटी

शोध निर्देशिका एवं असिस्टेंट प्रोफेसर

वेल्स यूनिवर्सिटी पल्लावरम चेन्नई (VISTAS)

आधुनिक काल के हिंदी साहित्य को विमर्शों का काल कहा जाता है। आदिकाल से लेकर अब तक कई विषयों पर विमर्शों का ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं जैसे- स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, किन्नर विमर्श, आदिवासी विमर्श, ग्रामीण-जीवन विमर्श, वृद्ध विमर्श आदि। हिंदी साहित्य में वृद्ध विमर्श की शुरुआत तब हुई जब साहित्यकारों में संवेदनात्मक रूप से यह महसूस किया कि संयुक्त परिवार से एकल परिवार बन गया है।

आजकल संयुक्त परिवार गायब हो गया है। हमारी सरकार भी हमें कहती है -'हम दो हमारे दो या एक।' इससे ही हम कह सकते हैं कि सरकार भी एकल परिवार ही केंद्र करता है। एक व्यक्ति का जीवन हम इस तरह विभाजन कर सकते हैं कि गर्भावस्था (गर्भ से जन्म तक), शैशवास्था (0 से 5 तक), बाल्यावस्था (5 से 12 तक), किशोरावस्था (12 से 18 तक), युवावस्था (18 से 25 तक), प्रौढ़ावस्था (25 से 60 तक), वृद्धावस्था में पहला युवा वृद्ध (60 से 75 तक) दूसरा वृद्ध (75

से मृत्यु तक)। यह सब अवस्थाएँ प्रत्येक मानव जीवन में उत्पन्न होती है।

वृद्धावस्था प्रत्येक मानव जीवन में आने वाली एक अवस्था है। इस अवस्था में मानव की प्राकृतिक घटना या स्वाभाविक अनुभवों से होते हैं। वृद्धावस्था एक परिपक्व की अवस्था है। जिसमें उनके अनुभवों से परिपक्व होकर कई समस्याओं का समाधान करने की चेष्टा उनमें होती है।

परिपक्वता का तात्पर्य यह है कि जीवन में आने वाली विभिन्न अवस्थाओं से जैसे के तैसे होकर उनका सामना करके फिर जीवन के इस अवस्था पर पहुँचना। वृद्धों की कई समस्याएँ एवं परिस्थितियों से उनके जीवन में उन्हें सामना करना पड़ रहा है। वृद्ध जीवन के अकेलेपन, शारीरिक परिस्थिति, मानसिक परिस्थिति, सामाजिक परिस्थिति, पारिवारिक परिस्थिति आदि को व्याख्यायित करता यह उपन्यास 'उस चिड़िया का नाम' जो 'पंकज बिष्ट' द्वारा लिखा गया है ।

इस उपन्यास में रमा नामक एक युवती रहती है वह एक डॉक्टर है। उसके पिता मरणासन्न रहते हैं। वह डॉक्टर होने के नाते पिता की सेवा नहीं कर पाई। रमा शहर से इस ग्रामीण पहाड़ी इलाके में स्थित अपने पिता के घर आती है पर तब तक उसके पिता पूरी तरह से जीवन की जंग हार चुके थे। रमा डॉक्टर होने के बावजूद पहाड़ी इलाके में रहते हुए भी अपेक्षित उपकरण न होने के कारण अपने पिता को इलाज नहीं कर पायी। पिता के मृत्यु, रमा को गहरा आघात पहुँचाता है। इससे ज्यादा उसे इस बात पर आश्चर्य है कि उसका भाई हरीश इस अवसर पर देर से पहुँचता है। पिता की मृत्यु के बाद बूढ़ी बुआजी उनके साथ रहती हैं जो हरीश एवं उनके बच्चों की देखभाल करती हैं। अपने पिता के मृत्यु के बाद यह सब परिस्थितियों उत्पन्न होती है।

वृद्ध बुआ एक विधवा है और अंधी भी। बुआजी के लिए उनके मृत पति की यादें मानसिक वेदना और अकेलेपन को दर्शाते हुए बताया गया है। बुआ हरीश को अपने पिता के मृत्यु के बाद समझाते हुए यह बात कहती है। मानसिक वेदना को दर्शाते हुए कहती है–'देख! मुझे

देख ! मेरी बेशर्मी देख ! मेरे सामने कौन नहीं मरा। पहले बड़ा भाई मरा, फिर माँ, फिर पिताजी, मेरे तीन बच्चे, उसके बाद चार पोते-पोती, फिर तेरे फूफा जी और आज... ।'[1] बुआ की सहनशीलता, अकेलेपन एवं मानसिक वेदना को पंकज बिष्ट जी ने यहाँ दर्शाया है।

इस बार बुआ जी खुद रोने लगी थी, बहुत ही नियंत्रित ढंग से कहती है- 'लेकिन मैं अब भी जिंदा हूँ, तुम लोगों के कारण। वरना क्या है, मेरे लिए। तेरे ऊपर अब बहुत जिम्मेदारी है। तुझे अपनी बहन को देखना है। इस बेचारी के लिए तो माँ-बाप सबकुछ वही था। इसको तो अपनी माँ का पता भी नहीं है। तुझे देखना है, इसे परेशानी न हो। तूने इसकी शादी-ब्याह करनी है।'[2] इन पंक्तियों द्वारा हमें अंधी बुआ की उत्तरदायित्व को निभाते हुए औपचारिक रूप से हरिश को सूचना देती है।

हरीश और रमा की मां उनके बचपन में ही गुजर गईं थीं। हरीश मात्र 10 साल की उम्र में मातृस्नेह से वंचित होता है। यहीं से उसके मन में पिता के विरुद्ध होता है। हरीश का दृढ़ विश्वास था कि उसकी माँ की मृत्यु के लिए उसके पिता ही उत्तरदायित्व हैं। चिकित्सा के अभाव तथा एक के बाद एक संतानोत्पत्ति के दबाव ने उनके शरीर को असमय काल का ग्रास बना दिया।

इस उपन्यास में हरीश के पिता एक चिड़िया को पालते थे। वह चिड़िया का नाम काफल पाको था। पंकज बिष्ट जी ने इस चिड़िया का रहस्यमयी व रोचक कहानी में बताई है। काफल का मतलब है- अंग्रेजी भाषा में बेबेरी। पाको का मतलब है- खाना। हिमालय पर्वत में मिलने वाली सबसे स्वादिष्ट फल बेबेरी है। उस चिड़िया को ढूँढते-ढूँढते सुरेश अपने बेटे के लिए जंगल जाता है। उस समय बुआ सुरेश के पुत्र की देखभाल करती है। सुरेश का पुत्र अपने पिता के आने तक इंतजार करता है पर सुरेश आ नहीं पात । तब तक अंधी बुआ उसका देखभाल करती है।

अंधी बुआ कहती है-'बचपन में तो तू बहुत चुप रहता था ! फिर बोली, वैसे बेटा जो भी कह शायद भगवान आँख बंद होने के बाद ही

दिखलाई देते हैं। और बेटा, सच बात तो यह है कि मैंने भगवान देख लिए हैं। अब मेरी किसी भी भगवान को देखने की इच्छा नहीं है। गोबिंद के बाबू से बड़ा भगवान नहीं हो सकता, बेटा! वरना इस पहाड़ी जिंदगी में अंधी औरत को कौन रखता है।'[3] इस बात को इतने नीरज से कहती है। इस पंक्तियों में बुआ की आत्मा वेदना दिखलाई देती है। बुआ, हरीश और रमा के साथ अपनी जिंदगी बिताती हैं। जब रमा शादी होकर चली जाती है और हरीश चिड़िया को ढूँढने चले जाता है। तब हरीश के बेटे के साथ अपना जीवन बिताती है। हरीश और रमा चले जाने के बाद उनके जीवन में अकेलेपन महसूस करती हैं। इस अवसर पर दुखमयी जीवन बिताती है।

इस उपन्यास में पंकज बिष्ट जी शारीरिक कमजोरियों के कारण उन पर प्रभाव को दर्शाया है जैसे बुआ अंधी होने के कारण अपना काम खुद करती है। मानसिक परिस्थिति के दौरान अपने पति, अपने बेटे, अपने माता-पिता आदि के मृत्यु को दर्शाया गया है। रिश्तेदार के अनुसार इनके भाई को ले सकते हैं जो अपनी पुरी परिवार को छोड़कर गए हैं। बुआ की कोई भी सहेली नहीं थीं जो उनके जीवन में मदद कर सके।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि 'उस चिड़िया का नाम' हिन्दी उपन्यासों में अपना अलग स्थान रखता है। उपन्यास में भाषा पर पहाड़ी सांस्कृतिक परिवेश का प्रभाव मिलती है। नेत्रहीन वृद्ध जीवन में अकेलापन, शारीरिक कमज़ोरी, मानसिक परिस्थिति, सामाजिक परिस्थिति, पारिवारिक परिस्थिति आदि पर नई दिशाओं की खोज की उत्सुकता है।

संदर्भ

1. https://www.samareducation.com/2021/06/stages-of-human-development-childhood-adolescence.html

2. वृद्ध विमर्श कथा आलोचना, डॉ. शगुफ़्ता नियाज़, विकास प्रकाशन, 2022

1.उस चिड़िया का नाम, पंकज बिष्ट, राजकमल पेपरबैक्स,2005,पृ.सं.-128

2.उस चिड़िया का नाम, पंकज बिष्ट, राजकमल पेपरबैक्स,2005,पृ.सं.-127

3.उस चिड़िया का नाम, पंकज बिष्ट, राजकमल पेपरबैक्स,2005,पृ.सं.-128